



29 May, 2024

आरंभिक (शुरुआती) मानसून

संदर्भ: IMD ने दक्षिण-पश्चिम मानसून की सामान्य प्रगति का अनुमान लगाया है, जिसके पांच दिनों के भीतर केरल तट पर पहुंचने की उम्मीद है।

➤ आरंभिक (शुरुआती) मानसून की परिभाषा:

- केरल में मानसून की शुरुआत भारत में चार महीने के दक्षिण-पश्चिम मानसून के मौसम की शुरुआत को चिह्नित करती है, जो देश की वार्षिक वर्षा के 70% से अधिक के लिए जिम्मेदार है।
- यह मानसून भारत में महत्वपूर्ण आर्थिक महत्व रखता है।

➤ आरंभिक (शुरुआती) मानसून के लिए IMD मानदंड:

- आईएमडी मानसून की शुरुआत की घोषणा करने के लिए 2016 में अपनाए गए विशिष्ट मापदंडों की पहचान करता है।
- इस घोषणा के लिए वर्षा, हवा की गति और तापमान से संबंधित विशिष्ट मापदंडों पर विचार किया जाता है।

➤ वर्षा मानदंड:

- मानसून की शुरुआत तब होती है, जब केरल और लक्षद्वीप में 14 नामित मौसम विज्ञान केंद्रों में से कम से कम 60% 10 मई के बाद लगातार दो दिनों तक न्यूनतम 2.5 मिमी बारिश की रिपोर्ट करते हैं।
- यदि विशिष्ट हवा और तापमान मानदंड पूरे होते हैं, तो दूसरे दिन मानसून के शुरुआत की घोषणा की जाती है।

➤ पवन आधारित मानदंड:

- भूमध्य रेखा से 10°N अक्षांश तक और 55°E से 80°E देशांतर के बीच फैली पश्चिमी हवाओं का दबाव 600 हेक्टापास्कल (hPa) तक होनी चाहिए।
- 5-10°N अक्षांश और 70-80°E देशांतर के बीच क्षेत्रीय हवा की गति 925 hPa पर 15-20 समुद्री मील (28-37 किलोमीटर प्रति घंटा) होनी चाहिए।

➤ ताप आधारित मानदंड:

- INSAT डेटा से निर्धारित आउटगोइंग लॉन्गवेव रेडिएशन (OLR) मान 5°N और 10°N अक्षांशों और 70°E और 75°E देशांतरों से घिरे क्षेत्र के भीतर 200 वाट प्रति वर्ग मीटर (w/m²) से कम होना चाहिए।

➤ दक्षिण-पश्चिम मानसून को प्रभावित करने वाले कारक:

- विभेदक तापन और शीतलन:** भूमि तापन और समुद्र शीतलन के कारण भारत पर कम दबाव और आसपास के समुद्रों पर उच्च दबाव होता है।
- अंतर उष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र (आईटीसीजेड) बदलाव:** आईटीसीजेड गर्मियों के दौरान गंगा के मैदान पर उत्तर की ओर बढ़ता है, जो मानसून-गर्त के रूप में कार्य करता है।
- मेडागास्कर के पूर्व में उच्च दबाव क्षेत्र:** इस उच्च दबाव क्षेत्र की स्थिति और तीव्रता भारतीय मानसून को प्रभावित करती है।
- तिब्बती पठार का गर्म होना:** तिब्बती पठार के तीव्र गर्म होने से उच्च ऊंचाई पर कम दबाव बनता है, जो मानसून की गतिशीलता को प्रभावित करता है।
- जेट स्ट्रीम मूवमेंट:** पश्चिमी जेट स्ट्रीम हिमालय के उत्तर की ओर बढ़ती है, जबकि उष्णकटिबंधीय पूर्वी जेट स्ट्रीम गर्मियों के दौरान भारतीय प्रायद्वीप पर बनती है, जो मानसून पैटर्न को प्रभावित करती है।

➤ दक्षिणी दोलन (एसओ):

- एसओ में उष्णकटिबंधीय पूर्वी प्रशांत महासागर और हिंद महासागर के बीच हवा और समुद्र की सतह के तापमान में बदलाव शामिल है।

- ला नीना (शीतलन चरण) का आम तौर पर भारतीय मानसून पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जबकि एल नीनो (गर्मी चरण) का विपरीत प्रभाव पड़ता है।

➤ हिंद महासागर द्विध्रुव (आईओडी):

- आईओडी पूर्वी (बंगाल की खाड़ी) और पश्चिमी (अरब सागर) हिंद महासागर के बीच तापमान के अंतर को संदर्भित करता है।
- सकारात्मक आईओडी भारत में अधिक वर्षा लाता है, जबकि नकारात्मक आईओडी नकारात्मक प्रभाव डालता है।

सुदूर-अवरक्त प्रयोग में ध्रुवीय विकिरण ऊर्जा

संदर्भ: एक जलवायु उपग्रह, जो पृथ्वी के ध्रुवों पर ऊष्मा उत्सर्जन का अध्ययन करने के लिए अभिप्रेत जोड़ी में से पहला है, को सफलतापूर्वक प्रक्षेपित किया गया।

➤ उपग्रह विवरण:

- इसे नासा और विस्कॉन्सिन-मैडिसन विश्वविद्यालय द्वारा विकसित किया गया है।
- प्रक्षेपण सेवा:** यह नासा द्वारा प्रदान की गई है।
- उद्देश्य:** पृथ्वी के ध्रुवों से सुदूर-अवरक्त (आईआर) विकिरण को मापना।
- लक्ष्य:** आर्कटिक और अंटार्कटिका से ऊष्मा उत्सर्जन और वैश्विक जलवायु पर उनके प्रभाव पर आंकड़ा एकत्र करना।

➤ उपग्रह विनिर्देश:

- इसमें स्पेक्ट्रोमीटर TIRS के साथ दो शूबॉक्स-आकार के क्यूबसैट शामिल हैं।
- प्रत्येक उपग्रह एक 6U क्यूबसैट है, जिसकी ऊंचाई लगभग 90 सेमी और चौड़ाई लगभग 120 सेमी है।
- IR प्रकाश को मापने के लिए विशेष रूप से आकार के दर्पण और डिटेक्टरों के साथ थर्मल इन्फ्रारेड स्पेक्ट्रोमीटर (TIRS) की सुविधा है।

➤ स्थापन:

- इन उपग्रहों को लगभग 525 किमी की ऊंचाई पर एक निकट-ध्रुवीय कक्षा में रखा जाएगा।

➤ महत्व:

- यह पृथ्वी के ताप संतुलन और ऊर्जा बजट को समझने में मदद करता है।
- यह ध्रुवीय क्षेत्र पृथ्वी के ऊर्जा अवशोषण और उत्सर्जन को कैसे प्रभावित करते हैं, इस बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।
- यह डेटा मौसम में परिवर्तन, समुद्री बर्फ की हानि, बर्फ की चादर पिघलने और समुद्र के स्तर में वृद्धि की भविष्यवाणी करने में सहायता करता है।
- किसानों, मछली पकड़ने वाले बेड़े और तटीय समुदायों के लिए जलवायु परिवर्तन के प्रति लचीलापन बनाने के लिए यह लाभकारी है।

➤ ध्रुवीय प्रवर्धन:

- ध्रुवीय प्रवर्धन एक ऐसी घटना है जहाँ शुद्ध विकिरण संतुलन में कोई भी परिवर्तन, जैसे कि ग्रीनहाउस गहनता, ग्रहों के औसत की तुलना में ध्रुवों के पास अधिक तापमान परिवर्तन का परिणाम देता है।
- यह शुद्ध विकिरण संतुलन में परिवर्तन के जवाब में उष्णकटिबंधीय के सापेक्ष ध्रुवों पर अनुभव की जाने वाली गर्मी के अनुपात को संदर्भित करता है।
- ग्रीनहाउस प्रभाव वाले ग्रह पर, जहाँ वायुमंडल अंतरिक्ष में दीर्घ तरंग विकिरण के उत्सर्जन को सीमित कर सकता है, सतह का तापमान सरल ग्रहीय संतुलन गणनाओं द्वारा अनुमानित से अधिक गर्म होता है।

Face to Face Centres





29 May, 2024

- वायुमंडल या व्यापक महासागर परिसंचरण द्वारा ऊष्मा परिवहन के कारण स्थानीय शुद्ध विकिरण संतुलन की तुलना में ध्रुव गर्म और भूमध्यरेखीय क्षेत्र ठंडे होते हैं।
- जब वैश्विक-औसत तापमान संदर्भ जलवायु के सापेक्ष कम होता है, तो ध्रुवों में महत्वपूर्ण शीतलन का अनुभव होता है।
- इसके विपरीत, जब वैश्विक-औसत तापमान अधिक होता है, तो ध्रुवों में पर्याप्त गर्मी होती है।
- शुक्र ने अपने जीवनकाल में ग्रीनहाउस प्रभाव में पर्याप्त वृद्धि का अनुभव किया है, जिसके परिणामस्वरूप इसके ध्रुवों में इस हद तक गर्मी हुई है कि ध्रुवों और भूमध्य रेखा के बीच सतह के तापमान में अंतर न्यूनतम है।
- पृथ्वी ग्रीनहाउस प्रभाव में योगदान देने वाले जल वाष्प और ट्रेस गैसों जैसे कारकों के कारण ध्रुवीय प्रवर्धन प्रदर्शित करती है, साथ ही वायुमंडल और महासागरों द्वारा कुशल ध्रुव की ओर ऊष्मा परिवहन भी करती है।
- आर्कटिक प्रवर्धन का अर्थ पृथ्वी के उत्तरी ध्रुव पर ध्रुवीय प्रवर्धन है।
- अंटार्कटिक प्रवर्धन का अर्थ दक्षिणी ध्रुव पर ध्रुवीय प्रवर्धन है।

क्षणिक (अस्थायी) खगोल विज्ञान

संदर्भ: कैलटेक के श्रीनिवास कुलकर्णी ने परिवर्तनशील और क्षणिक खगोलीय पिंडों पर अग्रणी शोध के लिए खगोल विज्ञान में 2024 का शॉ पुरस्कार जीता है।

- खगोलीय घटनाएँ जो अपेक्षाकृत कम अवधि में चमक में परिवर्तन प्रदर्शित करती हैं, क्षणिक (अस्थायी) खगोल विज्ञान के तहत आती हैं।
- यह चमक विभिन्न स्रोतों से उत्पन्न होती है और अपनी उत्पत्ति के आधार पर अलग-अलग विशेषताएँ प्रदर्शित करती हैं।
- गैलेक्टिक और एक्सट्रागैलेक्टिक क्षणिक खगोल विज्ञान:

एक्सट्रागैलेक्टिक क्षणिक खगोल विज्ञान:

➤ सुपरनोवा:

- यह तारों के जीवन के विस्फोटक अंतिम चरण है और इसके रासायनिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है।
- इसके प्रकारों में थर्मोन्यूक्लियर (टाइप Ia) और कोर-पतन (टाइप Ib, Ic, और II) शामिल हैं।
- यह मानकीकृत मोमबत्तियों के रूप में ब्रह्मांड विज्ञान के लिए महत्वपूर्ण है।
- इसके तहत घटित होने वाले सुपरल्यूमिनस सुपरनोवा (SLSNe) असाधारण रूप से चमकीले और लंबे समय तक चलने वाले होते हैं।

➤ गामा-रे बर्स्ट (GRBs):

- इसमें अत्यधिक ऊर्जावान घटनाएँ शामिल होती हैं।
- यह जटिल पदार्थों के विलय और बड़े पैमाने पर सितारों की मृत्यु से जुड़े होते हैं।
- यह उच्च ऊर्जा खगोल भौतिकी प्रक्रियाओं में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

➤ सक्रिय गैलेक्टिक नाभिक (AGN):

- सुपरमैसिव ब्लैक होल सक्रिय रूप से पदार्थ को एकत्रित करते हैं।
- ये विद्युत चुम्बकीय स्पेक्ट्रम में मजबूत विकिरण उत्सर्जित करते हैं।
- इसके अवलोकन और भौतिक विशेषताओं में विविधता पाई जाती है।

➤ ज्वारीय विघटन घटनाएँ (TDE):

- यह घटनाएँ तब होती हैं जब सुपरमैसिव ब्लैक होल के ज्वारीय बलों द्वारा तारों को अलग किया जाता है।
- इस प्रकार की घटनाएँ चमकदार फ्लेयर्स का उत्पादन करते हैं, जो मजबूत UV और ऑप्टिकल उत्सर्जन प्रदर्शित करते हैं।
- इसका मल्टी-मैसेंजर एस्ट्रोफिजिक्स के लिए आशाजनक लक्ष्य है।

➤ फास्ट रेडियो बर्स्ट (FRB):

- इसमें मिलीसेकंड तक चलने वाला ऊर्जावान रेडियो उत्सर्जन शामिल है।
- यह अज्ञात स्रोतों से उत्पन्न होने वाले रिपीटर और नॉन-रिपीटर के रूप में वर्गीकृत है।
- इसमें कई तरंग दैर्ध्य को उत्सर्जन करने की क्षमता है।

➤ किलोनोवा:

- यह न्यूट्रॉन तारों के विलय के परिणामस्वरूप होने वाले चमकीले विस्फोट हैं। ये गुरुत्वाकर्षण तरंगों और तेज न्यूक्लियोसिंथेसिस उत्पन्न करते हैं।
- इसे न्यूट्रॉन स्टार की भागीदारी के कारण सामान्य कॉम्पैक्ट ऑब्जेक्ट विलय से अलग किया जा सकता है।

गैलेक्टिक ट्रांजिएंट:

➤ नोवा:

- ये एक सफेद बौने और एक मुख्य अनुक्रम तारे के साथ बाइनरी सिस्टम में होने वाले विस्फोट हैं।
- इस तारे से खगोलीय अवशिष्ट सामग्री सफेद बौने पर जमा होती है, जिससे संलयन प्रतिक्रिया शुरू होती है।
- नोवा तारों की चमक में वृद्धि प्रदर्शित कर सकते हैं, इसमें से कुछ आवर्ती नोवा के रूप में दृष्टिगत होते हैं।

➤ एम-ड्वार्फ चमक:

- चुंबकीय पुनर्संयोजन के कारण एम-बौने (ड्वार्फ) सितारों पर सामान्य घटनाएँ होती रहती हैं।
- ये तारे बड़े पैमाने पर चमक में वृद्धि का उत्सर्जन करते हैं, कभी-कभी प्रति दिन कई बार उत्सर्जन करते हैं।
- तारकीय चुंबकीय क्षेत्रों और एक्सोप्लैनेट की संभावित रहने योग्यता को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

➤ परिवर्तनशील तारे:

- समय के साथ चमक में परिवर्तन प्रदर्शित करने वाले तारे।
- आंतरिक चर में स्पंदनशील (जैसे, सेफिड, आरआर लाइरा) और विस्फोटक (जैसे, नोवा, प्रलयकारी चर) शामिल हैं।
- बाह्य चर में ग्रहण करने वाले बाइनरी और घूर्णनशील चर (जैसे, स्टारस्पॉट) शामिल हैं।

➤ घूर्णन रेडियो ट्रांजिएंट (RRATs):

- इसे तेजी से घूमने वाले न्यूट्रॉन सितारों द्वारा उत्सर्जित अनियमित रेडियो पल्स द्वारा संदर्भित किया जाता है।
- यह नियमित पल्सर के विपरीत, RRATs अलग-अलग अंतराल के साथ छिटपुट रेडियो उत्सर्जन प्रदर्शित करते हैं।
- इसे पहली बार 2006 में पार्सर् मल्टीबीम पल्सर सर्वेक्षण के माध्यम से खोजा गया था।

Face to Face Centres





NEWS IN BETWEEN THE LINES

प्रवाह पोर्टल



भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के गवर्नर शक्तिकांत दास ने हाल ही में भारतीय रिजर्व बैंक की तीन प्रमुख पहलों का अनावरण किया, अर्थात् प्रवाह पोर्टल, रिटेल डायरेक्ट मोबाइल ऐप और एक फिनटेक रिपॉजिटरी।

प्रवाह पोर्टल के बारे में:

- प्रवाह (विनियामक आवेदन, सत्यापन और प्राधिकरण के लिए मंच) पोर्टल भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) द्वारा शुरू किया गया एक सुरक्षित और केंद्रीकृत वेब-आधारित पोर्टल है।
- यह व्यक्तियों या संस्थाओं को विभिन्न विनियामक अनुमोदनों के लिए सहजता से ऑनलाइन आवेदन करने की सुविधा प्रदान करता है।
- पोर्टल का उद्देश्य RBI द्वारा विनियामक अनुमोदन और स्वीकृति देने से संबंधित विभिन्न प्रक्रियाओं की दक्षता को बढ़ाना है।
- यह प्राधिकरण, लाइसेंस या विनियामक अनुमोदन प्राप्त करने के लिए एक सुव्यवस्थित तंत्र प्रदान करता है।
- यह RBI के साथ विनियामक बातचीत के लिए एक केंद्रीकृत मंच प्रदान करके विनियामक पारदर्शिता में योगदान देता है।
- यह विनियामक अनुमोदन प्रक्रिया में अधिक जवाबदेही और मानकीकरण को बढ़ावा देता है।
- रिटेल डायरेक्ट मोबाइल ऐप खुदरा निवेशकों को जी-सेक में लेनदेन करने में सहजता प्रदान करेगा।
- फिनटेक रिपॉजिटरी में भारतीय फिनटेक फर्मों के डेटा की जानकारी होगी।

भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार



हाल ही में, मस्कर में भारतीय दूतावास और भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार (एनएआई) ने ओमान में प्रवासी भारतीयों के ऐतिहासिक दस्तावेजों को संग्रहित करने के लिए अपनी तरह की पहली परियोजना को सफलतापूर्वक पूरा किया।

भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार के बारे में:

- भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार (एनएआई) की स्थापना 11 मार्च, 1891 को कलकत्ता (अब कोलकाता) में इंपीरियल रिकॉर्ड डिपार्टमेंट के रूप में की गई थी।
- यह दक्षिण एशिया का सबसे बड़ा अभिलेखीय भंडार है।
- यह देश की अभिलेखीय विरासत के संरक्षक के रूप में कार्य करता है और राष्ट्र के लिए स्थायी मूल्य के अभिलेखों को संरक्षित, सुरक्षित और सुलभ बनाने के लिए उत्तरदायी है।
- इसमें आधिकारिक दस्तावेजों, पांडुलिपियों, मानचित्रों, तस्वीरों और दृश्य-श्रव्य सामग्रियों सहित ऐतिहासिक अभिलेखों का एक विशाल संग्रह है।
- यह 11वीं शताब्दी के अभिलेखों को संरक्षित करता है, जो भारत के समृद्ध सांस्कृतिक, राजनीतिक और प्रशासनिक इतिहास की जानकारी प्रदान करता है।
- यह अपनी वेबसाइट और ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से अनुसंधान सुविधाएं, संदर्भ सेवाएं और डिजिटलीकृत अभिलेखों तक पहुंच प्रदान करता है।
- इसे 1911 में कोलकाता से नई दिल्ली स्थानांतरित कर दिया गया।

मुल्लापेरियार बांध



हाल ही में, विभिन्न किसान संगठनों के सदस्यों ने मदुरै के तल्लाकुलम हेड पोस्ट ऑफिस पर विरोध प्रदर्शन किया, जिसमें मुल्लापेरियार पर एक नया बांध बनाने की केरल की योजना की निंदा की गई।

मुल्लापेरियार बांध के बारे में:

- मुल्लापेरियार बांध, एक चिनाई वाला गुरुत्वाकर्षण बांध है जो केरल में स्थित है।
- इसका निर्माण पेरियार नदी पर किया गया था और इसका उद्देश्य सिंचाई और जलविद्युत उत्पादन के लिए पानी को मोड़ना है।
- बांध का स्वामित्व और संचालन तमिलनाडु राज्य द्वारा त्रावणकोर की तत्कालीन रियासत के साथ एक पट्टा समझौते के तहत किया जाता है।
- 1886 में हस्ताक्षरित पट्टा समझौता, बांध की सुरक्षा और जल बंटवारे पर चिंताओं के कारण केरल और तमिलनाडु के बीच विवाद का स्रोत है।
- बांध का निर्माण 1887 में शुरू हुआ और 1895 में पूरा हुआ, जिससे यह एक सदी से भी अधिक पुराना हो गया।
- इसका निर्माण चूना पत्थर और "सुगुली" (जली हुई ईंट का पाउडर और चीनी और कैल्शियम ऑक्साइड का मिश्रण) से किया गया था।

लाल सागर



हाल ही में, यमन के तट पर लाल सागर में एक मिसाइल हमले ने एक जहाज को क्षतिग्रस्त कर दिया।

लाल सागर के बारे में:

- अवस्थिति :** लाल सागर एक अर्ध-संलग्न उष्णकटिबंधीय बेसिन है, जो अफ्रीका और एशिया के मध्य में स्थित है।
- भौगोलिक सीमाएँ:** लाल सागर मिस्र, सऊदी अरब, यमन, सूडान, इरिट्रिया और जिबूती से घिरा हुआ है।

विशेषताएँ:

- लाल सागर दुनिया के सबसे खारे जल निकायों में से एक है।
- लाल सागर दरार के नीचे स्थित है, जो ग्रेट रिफ्ट घाटी का हिस्सा है।
- इसमें बड़ी प्रवाल भित्तियाँ हैं जो विभिन्न प्रकार के पौधों और जानवरों का घर हैं, जिनमें हॉक्सबिल कछुए, लाल शेर मछली और क्लाउनफिश शामिल हैं।
- यह उत्तर में स्वेज नहर के माध्यम से भूमध्य सागर से जुड़ा हुआ है।
- यह शुरुआती मिस्र के समुद्री वाणिज्य में महत्वपूर्ण था और इसे पानी के रूप में इस्तेमाल किया जाता था।





29 May, 2024

आनुवंशिक रूप से संशोधित मच्छर



हाल ही में, पूर्वी अफ्रीका के जिबूती में मलेरिया से लड़ने के लिए आनुवंशिक रूप से संशोधित (GMO) मच्छर छोड़े गए।

आनुवंशिक रूप से संशोधित मच्छरों के बारे में:

- आनुवंशिक रूप से संशोधित मच्छरों को रोग फैलाने वाले मच्छरों की प्रजातियों की वृद्धि को नियंत्रित करके मलेरिया, डेंगू बुखार, जीका वायरस आदि जैसे वेक्टर जनित रोगों से निपटने के लिए तैयार किया गया है।
- इन मच्छरों को आनुवंशिक संशोधनों को शामिल करके बनाया गया है जो या तो बीमारियों को फैलाने की उनकी क्षमता को कम करते हैं या उनकी जनसंख्या वृद्धि को बाधित कर देते हैं।
- इन मच्छरों को विशेष रूप से एडीज एजिटी और एनोफेलीज स्टेफेंसी जैसी बीमारी फैलाने वाली मच्छर प्रजातियों को लक्षित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जबकि पारिस्थितिकी तंत्र में अन्य जीवों को होने वाली क्षति को कम से कम किया जाता है।

सुर्खियों में स्थल

लीबिया

हाल ही में, भारत और लीबिया ने अपने द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने के लिए विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की।

लीबिया (राजधानी: त्रिपोली)

अवस्थिति : लीबिया उत्तरी अफ्रीका के माघरेब क्षेत्र में स्थित एक देश है।

सीमाएँ:

- लीबिया की सीमाएँ मिस्र (पूर्व), अल्जीरिया (पश्चिम), भूमध्य सागर (उत्तर), चाड (दक्षिण), सूडान (दक्षिण-पूर्व), नाइजर (दक्षिण-पश्चिम) और ट्यूनीशिया (उत्तर-पश्चिम) से लगती हैं।
- यह ग्रीस, इटली और माल्टा (उत्तर) के साथ समुद्री सीमाएँ भी साझा करता है।

भौतिक विशेषताएँ:

- लीबिया का सबसे ऊँचा स्थान बिक्कू बिट्टी है, जिसे बेट्रे पीक के नाम से भी जाना जाता है।
- लीबिया मुख्य रूप से एक रेगिस्तानी देश है, जिसमें वादी अल-हया, वादी अल-शती, वादी अल-कुफ्र और वादी अल-हमद जैसी नदियाँ और वादियाँ बहती हैं।
- लीबिया में विशाल तेल भंडार है और यह कच्चे तेल का एक महत्वपूर्ण निर्यातक है।



POINTS TO PONDER

- 2024 एशियाई जिमनास्टिक चैंपियनशिप में किसी भारतीय जिमनास्ट के लिए पहला स्वर्ण पदक किसने जीता? – **दीपा करमाकर**
- हाल ही में सुर्खियों में आए सबसे बड़े जातीय समूह न्यिशी जनजाति का घर कौन सा राज्य है? – **अरुणाचल प्रदेश**
- ईएसए/ईयू स्पेस काउंसिल में, कितने देशों ने हाल ही में जीरो डेब्रिस चार्टर का समर्थन किया? – **12**
- मध्य प्रदेश के किस क्षेत्र में गेल (इंडिया) लिमिटेड ने अपना पहला ग्रीन हाइड्रोजन प्लांट लॉन्च किया? – **विजयपुर**
- माउंट मुंगालो कहाँ स्थित है, जिसे हाल ही में भूस्खलन का सामना करना पड़ा था? – **पापुआ न्यू गिनी**

Face to Face Centres

